दिनांक :- 15-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज करेगंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्राचीन इतिहास

इकाई :- ६१०

पत्र :- प्रथम

अध्याय : छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्रोत—

क्षत्रिय :- समाज का दूसरा महत्वपूर्ण वर्ण क्षत्रिय था। महाभारत में इस धर्म का विशिष्ट कर्म अध्ययन प्रजा की रक्षा यज्ञ करना तथा देन देना बताया गया है।

बौद्ध ग्रंथो मे क्षत्रियों को ब्राह्मण से श्रेष्ठ दिखाया गया है किंतु प्राचीन शास्त्रों में क्षत्रियों को वेद पढ़ाने दान लेने तथा यज्ञ कराने का अधिकार नहीं किया गया है।

इस काल में कुछ दार्शनिक क्षत्रिय राजाओं के नाम मिलते हैं जैसे: विदेह के राजा जनक ने याज्ञवल्क्य को शिक्षा दी क्षत्रिय वर्ण की प्रतिष्ठा अब इसलिए बढ़ गई क्योंकि अब लोहे के उपकरणों का प्रयोग युद्धास्त्रों के रूप में होने लगा था।

वैश्य :- समाज का तीसरा वर्ण था। महाभारत में इसका मुख्य कार्य - अध्ययन दान देना, यज्ञ करना तथा सही ढंग से धन अर्जित करना बताया गया है।

इस काल में कृषि उपकरण तथा उत्पादन में विकास से वैश्य वर्ण की आर्थिक क्षमता भी बढ़ गई थी। इस समय अनेक सम्पन्न श्रेष्ठियों की चर्चा बौद्ध ग्रंथों से प्राप्त होती है।

शूद्र की स्थिति - गौतम ने शूद्र को अनार्य कहा है तथा व्यवस्था दी है कि शूद्रों को उच्च वर्णों के भोजन का झूठन ग्रहण करना चाहिए तथा उसके

द्वारा भक्त वस्त्र को ग्रहण करना चाहिए।

पाणिनी ने शूद्र को दो वर्गों मे विभाजित किया है : 1. अनिर्वासित (अबहिष्कृत) ② निर्वासित (बहिष्कृत)

ब्राह्मण शूद्रों को दो वर्गों मे विभाजित किया। ब्राह्मण शूद्रों का स्पर्श नही करते थे।

द्विजो का शूद्रो के साथ भोजन और विवाह निषिद्ध था किंतु ऐतिहासिक स्त्रोतो से पता चलता है कि शूद्रो को इस काल मे अंत्येष्टि की अग्नि मे आहुति देने का अधिकार प्राप्त था।

सांख्यायन स्त्रोत सूत्र के अनुसार शूद्र भी ओदन एवं महाव्रत नामक संस्कार मे तीन अन्य वर्गों के साथ भाग ले सकता था।

अनुलोम और प्रतिलोम विवाह के आधार पर जाति का निर्धारण सबसे पहले बौधायन ने किया।

प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथो मे निम्न जातियो के लिये हीनशिल्प शब्द का प्रयोग हुआ है। यहाँ प्रायः 5 हीन जातियो

का उल्लेख हुआ है। चांडाल निषाद, वेण रथकार, पुक्कुस

बुद्ध और महावीर जन्म से जाति के समर्थक नहीं थे बल्कि कर्म पर आधारित व्यवस्था के पक्षपाती थी

जैन ग्रंथ पन्नवणा में देश, जाति, कुल, कर्म, भाषा और शिल्प के आधार पर 5 प्रकार के आर्य बताए गए है।

परिवार — परिवार के मुखिया के अधिकारो में वृद्धि हुई। वह अपने पुत्र को संपत्ति के अधिकार से वंचित कर सकता था। सूत्र साहित्य में पिता द्वारा पुत्र को दान में देने या बेचने का संकेत मिलता है।

स्त्रियो की स्थिति — स्त्रियो की स्थिति में क्रमिक गिरावट देखी गई। उसे जीवन के प्रत्येक पड़ाव में पुरुषो के अधीन कर दिया गया था। उत्तराधिकार में भी उनके साथ भेदभाव बरता जाने लगा।

आपस्तंब ने अब उसी दिशा में पुत्री को पिता की संपत्ति

का उत्तराधिकारी माना जब उसका कोई सपिण्ड उत्तराधिकारी न हो।

इस समय नये धर्मों में प्रभाव से स्त्रियों को बचाने के लिये।

स्त्रियों के विवाह की आयु को भी घटा दिया गया। अवि

पादित कन्या के लिये पाणिनी ने 'कुमार' शब्द का प्रयोग किया

है जिस समय वह विवाह योग्य हो जाती थी उस समय उस

वर्या कहा जाता था। अपनी इच्छा से पति चुनने वाली कन्या

को पवित्र कहा जाता था। इस समय सगोत्रीय विवाह के

भी अस्तित्व मिलते है जैसे अपने ही कुल में अपनी कन्याओं

का विवाह करते थे।

इस काल में प्रथम बार सती प्रथा का साहित्यिक साक्ष्य

प्राप्त होती है, जब एक ग्रीक लेखक ने उत्तर पश्चिम के

संबंध में इस प्रथा की चर्चा की है। दूसरी चर्चा महाभारत में

मिलती है जब पांडव की पत्नी माद्री के उसके साथ सती

होने का उल्लेख किया गया है।

बौद्ध साहित्य में अनेक स्त्रियों को सुन्दर पद्यात्मक आख्यान लिखने का श्रेय दिया गया है। इसका उदाहरण थेरी गाथा में मिलता है।

दासव्यवस्था :- इस काल में दास व्यवस्था प्रचलित थी। विनय पिटक में तीन प्रकार के दासों की चर्चा मिलती है।

① घर में दासी से उत्पन्न दास ② युद्ध में बंदी किया हुआ दास

③ धन से खरीदा गया दास

दीर्घ निकाय के चार प्रकार के दास की चर्चा है जिनमें प्रथम तीन तो उपरोक्त ही हैं परंतु चौथा दास है: स्वेच्छा से बना दास

साहित्य —

उपनिषदों के पश्चात् ब्राह्मण साहित्य का एक बड़ा भाग सूत्र गृह सूत्र तथा धर्म सूत्र इनमें धर्म सूत्र सर्वाधिक महत्व का है।

सूत्र साहित्य गद्य पद्य दोनों से रचित है।

सूत्र साहित्य की तरह स्मृतियों से धार्मिक तथा सामाजिक व्यवस्था का प्रतिपादन हुआ है। स्मृति साहित्य

Scanned with CamScanner

की रचना स्मृति साहित्य केवल पद्य में लिखा गया है।

सूत्र तथा स्मृति साहित्य मिलकर शास्त्र कहे जाते है।

गौतम धर्म सूत्र सर्वाधिक प्राचीन है। प्रारंभ में गौतम बौधायन वशिष्ठ धर्म सूत्र को उत्तर भारत का माना जाता है जबकि बौधायन एवं आपस्तंभ को दक्षिण भारत का।

सूत्र साहित्य के द्वारा जाति पर आधारित समाज को नियम बद्ध करने के कोशिश की गई है।

बौद्ध काल तक भारत में लेखन कला को नियमबद्ध करने की गई है।

बौद्ध काल तक भारत में लेखन कला का विकास हो गया था। भारत सूत्र साहित्य के द्वारा जातिपर आधारित समाज को नियमबद्ध करने की कोशिश की गई है।

तथा ईरानी आक्रमण की वजह से खरोष्ठी तथा अरमाइक लिपी का विकास हुआ जबकि शेष भारत में ब्राह्मी लिपि का प्रचलन था।

Scanned with CamScanner